Shri Ganesha Ashtakam

श्रीगणेशाष्टकम्

Document Information

Text title : Ganesha Ashtakam 6

File name : gaNeshAShTakamApaTIkara.itx

Category : ganesha, ApaTIkara, aShTaka

Location : doc_ganesha

Author : ma sa ApaTIkara

Transliterated by : Mandar Mali aryavrutta gmail.com

Proofread by : Mandar Mali aryavrutta gmail.com

Description/comments : stotrapanchadashI by Shri M. S. Apatikar, Satara

Source : Sharada year 11, Vol 21-22, September 1970

Acknowledge-Permission: Pt. Vasant A. Gadgil, Sharada Gaurava Granthamala, 425 Sadashv Peth, Pune 30

Latest update : September 14, 2019

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

February 2, 2024

sanskritdocuments.org

श्रीगणेशाष्टकम्

(भुजङ्गप्रयातम्)

अविद्यानिहन्त्रे सुविद्याप्रदात्रे
    नमो विघ्नहन्त्रे सदानन्ददात्रे ।
उमाकान्तपुत्राय विघ्नान्तकाय
    नमस्ते नमस्तेऽन्तरायान्तकाय ॥ १॥

नमो भालचन्द्राय सिद्धिप्रदाय
    चिदानन्दरूपाय दुःखान्तकाय ।
अनन्ताय शान्ताय नागान्तकाय
    नमस्ते नमस्तेऽन्तरायान्तकाय ॥ २॥

नमस्ते भवानीसुपुत्राय नित्यं
    नमस्ते सदा भक्तचित्तार्तिनाशिन् ।
नमस्ते प्रभो ज्ञानदात्रे नमस्ते
    नमस्ते मनोवाञ् छितानन्ददाय ॥ ३॥

सुदूर्वाङ्कुरै रक्तपुष्पर्लसन्तं
    सदा मोदकैर्मोदमानं गजास्यम् ।
शमीपत्रतुष्टं सुगन्धप्रियं त्वां
    भवाम्भोधिमग्नो भवन्तं भजेऽहम् ॥ ४॥

अनाथार्तिनाशिन् पुरारातिपुत्र
    मयूरेश हेरम्ब हे ढुण्ढिराज ।
विनाशाय विघ्नस्य बद्धाञ्जलिस्त्वां
    अहं प्रार्थये भक्तियुक्तो गणेश ॥ ५॥

त्वदीयाय भक्ताय दत्त्वा वरांस्त्वं
    शुभैराशिभी रक्ष संसारसिन्धौ ।
अरे सिन्धुरारे दयाब्धे भवाब्धौ

निमग्नं विपन्नं जनं पाहि नित्यम् ॥ ६॥

गणेश त्वदीयं पदाब्जं शरण्यं
प्रसीद प्रसीद प्रभो पाशपाणे ।
वरेण्य प्रभो क्षेमदातर्नमस्ते
सदा प्रार्थये त्वामहं भक्तियुक्तः ॥ ७॥

प्रसीद प्रसीद प्रतापार्क देव
प्रसीद प्रसीदैकदन्त प्रभो त्वम् ।
प्रसीद प्रसीद प्रभो विघ्नहर्तः
प्रसीद प्रसीद प्रभो वक्रतुण्ड ॥ ८॥

भुजङ्गप्रयाते निबद्धं मया यो
गणेशाष्टकं भक्तियक्तश्च चित्ते ।
सदा ध्यायति स्तोत्रमेतत्स धन्यः
सुखं शान्तिमाप्वाधिगच्छेत् स पुण्यम् ॥ ९॥

सखारामसूनुर्महादेवशर्मा
लिखित्वा गणेशाष्टकं भक्तियुक्तः ।
परां शान्तिमाप्नोद् विनाशं विपत्ते-
र्मनोवाञ्छितं श्रीगणेशकृपातः ॥ १०॥

इति श्री आपटीकरविरचितं श्रीगणेशाष्टकं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by Mandar Mali aryavrutta gmail.com

Shri Ganesha Ashtakam
pdf was typeset on February 2, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*